सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिमार्ग – तेरह

" जय श्री कृष्ण "

भोर की बेला भई

पलक धीर धीर खुले

नैन तीर छूटे ऐसे

जैसे सूरज किरणें

छूअत दिल कंवल खिले

अंग अंग रंग बरसे

लाल पीला नीला आसमानी

छू ये नैन नैन तरसे

ढूँढे पीया प्रीत झलक

तडपे तन मन थिरके

दौड दौड पहूँच नंदभवन

तिरछे तीर चुभने

नैन से नैन टकरायी ऐसे

रंग रंग तरंग तरंग अंग अंग

उठे स्पंदन खनके कंगन

गाये उमंग नाचें पायल

बौछारें रंग कहे हर तरंग

होली है! होली है!

रंग दो प्रियतम प्रेम रंग

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम!   हे श्याम!
रंग रंग रंग रंग
आज तुने ऐसा क्या रंग दियो
मन मन यही रंग मन मन भाये
जीत देखूं यह रंग नजर आये
श्याम श्याम श्याम
जन्म जन्म से कह रही थी
जीवन जीवन से घुंट रही थी
पल पल तडप रही थी
घडी घडी पुकार रही थी
श्याम!
बिना रंगाये मैं तो घर नही जाऊँगी
हाँ!
चाहे कितनी बदले ये तन मन की चुनरिया
श्याम पीया मोरी रंग दे चुनरिया
और आज!
मेरी चुनरी में
ओय ओय मेरी चुनरी में
मेरी चुनरी में लग गयो रंग री
ओय मेरी चुनरी में लग गयो रंग री
मैं तो हो गई श्याम श्याम श्याम
मेरी चुनरी में डार गयो रंग री
मैं तो हो भई श्याम श्याम श्याम
श्याम रंग लगाई गयो
श्याम के नैन से
श्याम रंग छांट गयो
श्याम के हस्त से
श्याम रंग डार गयो

श्याम के मन से

मैं तो

अरि मैं तो

मैं तो हो गई श्याम श्याम श्याम

मैं तो हो भई श्याम श्याम श्याम

मेरी चुनरी में लग गयो श्याम री

मेरी चुनरी पकड गयो श्...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"सह देह सह धन सह मन सह आत्म

सह महा तत्वों सह तत्व सह एकात्म"

कितना अनोखा और अलौकिक

कितना मधुर और सैद्धांतिक

यह जन्म - जीवन और ब्रह्मांड की रचना है।

जो हर तत्व - हर महा तत्वों - हर आत्मा - हर मन - हर धन - हर देह साथ साथ रह कर

साथ साथ हो कर

साथ साथ कर्म कर

साथ साथ परिवर्तन कर

साथ साथ ज्ञान पा कर

साथ साथ ध्यान पा कर

साथ साथ विज्ञान पा कर

साथ साथ प्रज्ञान पा कर

साथ साथ सिद्धि पा कर

साथ साथ सिद्धांत पा कर

अपने आप को विचरते है

अपने आप को साधते है

अपने आप को दिशा युक्त नियते है

अपने आप को पहचानते है

अपने आप को त्यागते है

यही ही यह ब्रह्मांड का कर्म है

यही ही यह ब्रह्मांड का मर्म है

यही ही यह ब्रह्मांड का धर्म है

यही ही सत्य है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज

इन्हें काल और कर्म से असर होती है?

आकाश

इन्हें काल और कर्म से असर होती है?

पृथ्वी

इन्हें काल और कर्म से असर होती है?

वायु

इन्हें काल और कर्म से असर होती है?

जल

इन्हें काल और कर्म से असर होती है?

हाँ!

हर तत्व को काल और कर्म की असर होती है।

इसलिए तो सतयुग त्रेतायुग द्वापरयुग और कलयुग है

इसलिए तो सतयुग में सत्यता पवित्रता विशुद्धता और आध्यात्मता थी

जो त्रेतायुग में पवित्रता विशुद्धता और आध्यात्मता था

जो द्वापरयुग में विशुद्धता और आध्यात्मता था

जो कलयुग में आध्यात्मता है

यह आध्यात्मता से ही विशुद्धता जागृत कर सकते है।

यह आध्यात्मता और विशुद्धता से ही पवित्रता जागृत कर सकते है।

यह आध्यत्मता विशुद्धता और पवित्रता से ही सत्यता जागृत कर सकते है।

यह आध्यात्मया विशुद्धता पवित्रता और सत्यता से ही योग्यता पा सकते है।

ऐसा पाते ही पाते मानव देव हो स...

इन्सान

कहां है इन्सान!

सोच न मिली कहीं ऐसी

गति न गुणाई कहीं ऐसी
रीति न रचाई कहीं ऐसी
कर्म न कराई कहीं ऐसी
धर्म न धराई कहीं ऐसी
जो इन्सान कहलाई
कहां ढूंढे इन्सानियत
न कहीं खुद में मिली
न कहीं साथी में मिली
न कहीं यार में मिली
न कहीं वंश में मिली
न कहीं प्यार में मिली
न कहीं गृह में मिली
न कहीं वर्ण में मिली
न कहीं आचार में मिली
न कहीं व्यवहार में मिली
न कहीं रंग में मिली
न कहीं संग में मिली
न कहीं कर्म में मिली
न कहीं धर्म में मिली
न कहीं अन्न में मिली
न कहीं आंगन में मिली
न कहीं जीवन में मिली
न कहीं स्मशान में मिली
बस! यूं ही चलते चले
बस! यूं ही मरते चले

सोचते कहीं खुद में जाग जाय

सोचते कहीं खुदाई में जाग जाय

सोचते कहीं इनमें जाग जाय

सोचते कहीं उनमें जाग जाय

सोचते कहीं हममें जाग जाय

कहीं सालों से

कहीं युगों से

कहीं जीवनों से

कहीं जन्मों से

गुरु समाधिस्थ है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सच स्त्री!

एक ऐसा पात्र यह ब्रह्मांड का जो कितने विश्वास से - कितने भाग्य से - कितनी हिम्मत से और कितनी अचलता से अपने पति से जुडती है - जो थोडी सी पहचान जिदंगी की आखरी साँस तक साथ निभाती है।

जिनमें उन्हें चार दिवारों में रहना

जिनमें उन्हें गृहस्थी संभालना

जिनमें उन्हें संस्कार सिंचना

जिनमें उन्हें मर्यादा ख्यालना

जिनमें उन्हें मौन धरना

जिनमें उन्हें सर्वे सुनना

जिनमें उन्हें सबकुछ करना

जिनमें उन्हें परदा रखना

जिनमें उन्हें जुल्म सहना

जिनमें उन्हें खुद छूपाना

जिनमें उन्हें सार्वभौमत्व तोडना

जिनमें उन्हें अपना लुटाना

जिनमें उन्हें आँचल बदलना

जिनमें उन्हें सहन अपनाना

जिनमें उन्हें सौदर्य सजाना

जिनमें उन्हें अशिक्षित प्रदानना

जिनमें उन्हें आंसु पीना

जिनमें उन्हें असमंजस सोचना

ओहह .... कितना जिनमें.......

क्या से क्या हो

वात्सल्य

प्रेम

करुणा

आत्मीयता

एका...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम मनुष्य कल्पना शक्ति से भरे

हम मनुष्य विचार शक्ति से भरे

हम मनुष्य संकल्प शक्ति से भरे

हम मनुष्य दार्शनिक शक्ति से भरे

हम मनुष्य मानसिक शक्ति से भरे

हम मनुष्य काल्पनिक शक्ति से भरे

हम मनुष्य अनुमान शक्ति से भरे

हम मनुष्य संशय शक्ति से भरे

हम मनुष्य वैश्विक शक्ति से भरे

हम मनुष्य वैकल्पिक शक्ति से भरे

हम मनुष्य आचरण शक्ति से भरे

हम मनुष्य स्वैच्छिक शक्ति से भरे

हम मनुष्य मान्यता शक्ति से भरे

हम मनुष्य विकसित शक्ति से भरे

हम मनुष्य विघटित शक्ति से भरे

हम मनुष्य स्वीकृति शक्ति से भरे

हम मनुष्य आशंकित शक्ति से भरे

हम मनुष्य क्रिया शक्ति से भरे

हम मनुष्य अनुकरण शक्ति से भरे

हम मनुष्य जिज्ञासा शक्ति से भरे

हम मनुष्य स्वप्न शक्ति से भरे

आदि ऐसी सामान्यता शक्ति से भरे है

जो जीते जीते मृतक हो जाता है

साधारणता से रहते रहते हम मनुष्य साधारणत शैली में ही अपने आप को ...

हमारे साथ - हमारे पास - हमारे आसपास ऐसा क्या होता है? जो हमें

सकारात्मक - सुखदायीत्व - सरलता - सुरक्षा के बदले नकारात्मक - दुखदायीत्व

- कठिनाई असलामती की परिस्थितओं में अधिक विचरते है।

ऐसा क्या हम करते है?

ऐसा हम सोचते है?

ऐसा क्या हम जगाते है?

ऐसा क्या हम रचते है?

ऐसा क्या हम घडते है?

ऐसा क्या हम शिक्षते है?

ऐसा क्या हम धरते है?

ऐसा क्या हम मानते है?

ऐसा क्या हम अपनाते है?

क्यूँकि

हर विचार

हर आयोजन

हर नियमन

हर व्यवहार

हर रीत

हर हेतु

हर गठन

हर माध्यम

हर जोडाण

हर मिलना

हर कथन

हर कार्य

हर काल

हम असमंजस से ही स्वीकारते ही है और अधुरप या नसीबवंत - भाग्यत्व से समझ कर या मान कर हम गुजरते रहते है - सांधते रहते है - साक्षरते रहते है - अनुभवते रहते है - जीते रहते है।

क्यूँ?

हम घमरोळते है - यही ही जीवन है।

हम स्वीकारते है - यही ही जीवन है।

हम तुलनात्मकते है...

मुझे मेरी पहचान हो गई

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे मन से जो मैं करवाता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरी इन्द्रियों से जो मैं करता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरी शिक्षा से जो मैं करता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरा धर्म से जो मैं अपनाता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरी क्रिया से जो मैं करता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे तन से जो मैं करवाता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे धन से जो मैं उपभोगता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे अन्न से जो मैं आरोगता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे साथ से जो मैं जोडता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे अंश से जो मैं उत्पन्नता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे उच्चार से जो मैं कहता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरी दृष्टि से जो मैं निहालता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरी गंध से जो मैं महकता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे स्पर्श से जो मैं फैलाता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे रंग से जो मैं रंगता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे संग से जो जगाता हूँ ऐसा मैं हूँ

मेरे डग से जो मैं भरता हूँ ऐसा मैं हूँ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे जी...

कितना श्वास है श्री गिरिराजजी में

कितना प्राणवायु है श्री यमुनाजी में

कितनी विशुद्धता है श्री मथुराजी में

कितनी पवित्रता है श्री गोकुलजी में

कितना स्पंदन है श्री गोवर्धनजी परिक्रमा में

कितना स्पर्श है श्री व्रजजी रज में

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

संकल्प ही करते है

तो त्वरित उत्कंठा जागती है - मिलने की

तो त्वरित नैनो में उठती है - अनगिनत दर्शन की अभिलाषाएं

तो त्वरित मन में स्फूरते है -

विरह भाव की तडपनें

तो त्वरित तन में मचलती है -

प्यास खुदके समर्पण की

जबसे याद जागी

श्वास उच्छ्वास अपनी गति अनियमित हो जाते है - श्री गिरिराजजी के उच्छ्वास से ही नियमन पाऊँ

प्राणवायु की उर्जा अपनी तीव्रता मंद देते है - श्री यमुनाजी के पान से ही पुष्टि उर्जा पाऊँ

शुद्धता की मात्रा अपनी डगमग होती है - श्री मथुरा के पगडंडी से विशुद्धता पाऊँ

पवित्रता का अर्धसिंचन की लोलुपता होती है - श्री गोकुल के जीवन से पवित्रत...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

मुरारी पद पंकज बोले

श्री श्यामा श्यामा

सुराअसुर बोले

श्री श्यामा श्यामा

कालिंदी गिरि बोले

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

भुवन भुवन बोले

श्री श्यामा श्यामा

शूक मयूर हंस बोले

श्री श्यामा श्यामा

शिव विरंचि बोले

श्री श्यामा श्यामा

घना घनघोर बोले

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

ध्रुव पराशर बोले

श्री श्यामा श्यामा

विशुद्ध मथुरा बोले

श्री श्यामा श्यामा

सकल गोपगोपी बोले

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

मम मन आनंद बोले

श्री श्यामा श्यामा

सकल सिद्धि बोले

श्री श्यामा श्यामा

तनु नवत्व बोले

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श...

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

मुरारी पद पंकज बोले

श्री श्यामा श्यामा

सुराअसुर बोले

श्री श्यामा श्यामा

कालिंदी गिरि बोले

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

भुवन भुवन बोले

श्री श्यामा श्यामा

शूक मयूर हंस बोले

श्री श्यामा श्यामा

शिव विरंचि बोले

श्री श्यामा श्यामा

घना घनघोर बोले

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

ध्रुव पराशर बोले

श्री श्यामा श्यामा

विशुद्ध मथुरा बोले

श्री श्यामा श्यामा

सकल गोपगोपी बोले

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

मम मन आनंद बोले

श्री श्यामा श्यामा

सकल सिद्धि बोले

श्री श्यामा श्यामा

तनु नवत्व बोले

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

कालिंदी श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

इन्द्रप्रस्थ श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

वृंदावन श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

मथुरा श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

गोकुल श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

प्रयागराज श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

घाट घाट पर श्याम बिराजे

श्री श्यामा श्यामा

कुंज कुंज में श्याम बिराजे

श्री श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा

श्री श्यामा श्यामा

व्रज रज में श्याम समाये

श्री श्यामा श्यामा

व्रज निकुंज में श्याम समाये

श्री श्यामा श्यामा

व्रज लता में श्याम समाये

श्री श्यामा श्यामा

व्रज गली में श्याम ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे गिरिराजजी!

ऐसे बसे हो रज रज से

हर रज छूते छूते तन हरिदासवर्य का सेवक शरणता जाय

ऐसे बसे हो कण कण से

हर कण को विहारते विहारते हर द्रष्टि हरिदासवर्य का दर्शन पाता जाय

ऐसे बसे हो कंकर कंकर से

हर कंकर निहारते निहारते हर विरह हरिदासवर्य से संबंध बांधता जाय

ऐसे बसे हो शिला शिला से

हर शिला वदते वदते मन हरिदासवर्य का मानस स्वीकारता जाय

ऐसे बसे हो तृण तृण से

हर तृण सिंचते सिंचते जन्म हरिदासवर्य का गोपालक होता जाय

ऐसे बसे हो वनस्पति वनस्पति से

हर वनस्पति औषधते औषधते जीवन हरिदासवर्य का गौ रक्षक होता जाय

ऐसे बसे हो चट्टान चट्टान से

हर चट्टान कदमते कदमते हर डग हरिदासवर्य का दंडवत पूजता जाय

ऐसे बसे हो शिखर शिखर से

हर शिखर सरते सरते हर धारा हरिदासवर्य का अभिषेक करता जाय

ऐसे बसे हो वायुमंडल गूँज से

हर गूँज लहरते लहरते हर स्वर हरिदासवर्य का स्मरण करती जाय

ऐसे ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राम राम राम राम

दुलारे राम दुलारे राम

प्यारे राम प्यारे राम

हमारे राम हमारे राम

भातृ राम भातृ राम

वशिष्ठ राम वशिष्ठ राम

ऋषि यज्ञक राम ऋषि यज्ञक राम

राक्षस निकंदन राम राक्षक निकंदन राम

कौशल्या पुत्र राम कौशल्या पुत्र राम

दशरद नंदन राम दशरथ नंदन राम

सीता राम सीता राम

वचनीय राम वचनीय राम

दंडक राम दंडक राम

वननीय राम वननीय राम

वनगृह्य राम वनगृह्य राम

रक्षक राम रक्षक राम

कर्मठ राम कर्मठ राम

केवट राम केवट राम

शबरी राम शबरी राम

हनुमान राम हनुमान राम

वाली राम वाली राम

जटायु राम जटायु राम

रामेश्वर राम रामेश्वर राम

सेतु राम सेतु राम

विभीषण राम विभीषण राम

रावण सिद्धेय राम रावण सिद्धेय राम

रावण विजयी राम रावण विजयी राम

रावण मुक्तिय राम रावण मुक्तिय राम

लंका विजयी राम लंका विजयी राम

सीता स्वीकार्य राम सीता स्वीकार्य राम

विजया दशम राम विजया दशम राम

भरत मिलन राम भरत मिलन र...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्या जन्म बंधन के लिए या मुक्ति के लिए या एकात्म के लिए है?
क्या विवाह संस्कार बंधन के लिए या मुक्ति के लिए या एकात्म के लिए करते है?
क्या अवस्था की व्यवस्था बंधन के लिए या मुक्ति के लिए या एकात्म के लिए करते है?
क्या आश्रम की व्यवस्था बंधन के लिए या मुक्ति के लिए या एकात्म के लिए करते है?
क्या वर्ण की व्यवस्था बंधन के लिए या मुक्ति के लिए या एकात्म के लिए करते है?
क्या हमारा जन्म और जीवन संस्कार और व्यवस्था नियमन के आधारित है?
हाँ! इतना तो समझ सकते है की जन्म - संस्कार - जीवन कर्म के सिद्धांत आधारित है ही तो भी हम कहीं कर्म असैद्धांतिक करते ही रहते है और जन्म जीवन नष्ट करते है। - क्यूँ?
सच, कहीं तरह से तरासा - निचोडा - सरखाया - मिलाया - जताया - जिज्ञाया - चिंतनाया - माध्यमाया - विघटनाया श्री कृष्ण चरित्र से और तत्व विज्ञान से पर आखिर तो ....
हम स्नातक है
हमारी पास योग्य ज्ञान है
हमारी पास सही तकनीक है
हमारी पास जीवन निर्वाह के अधिक आय है
हमारी पास जीने की हर व्यवस्था उपलब्ध है
हमारी पास जीवन व्यतीत करने की अधिक क्षमता है
हमारी पास योग्य मूल्यांकन करने का अभ्यास है
हमारी लायकात अनुसार योग्य हमारे कार्य से अर्थोपार्जन करते है
तो भी हम सदा अधिक से अधिक हर प्रकार की कमाई करे

तो हम कौन?

तो हमारा जीवन कैसा?

तो हमारे वंशज कैसे?

तो हमारा बुढापा कैसा?

तो हमारा धर्म कैसा?

तो हमारा परमात्मा कैसा?

तो हमारा ....

सोचो! सोच लो! सोचते ही रहना!

सच में हम मनुष्य है?

या मानव है?

सच में हम स्नातक है?

या अशिक्षित है?

अवश्य समझना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

भागवत - भागवत - भागवत

श्री मद् भागवत

श्री मद् भागवत

श्री मद् भागवत

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे भागवत!

हे भागवत!

हे भागवत!

हे जन्म जीवन सिद्धांत श्रेष्ठ

निचोड निचोड निचोड

हे कृष्ण! कितनी काटे रैन

हे राधा! कितने काटे दिन

सूक्ष्म अणु से सुक्ष्म अणु

अणु से अणु

परमाणु से परमाणु

छूते छूते चंद्र

छूते छूते सूर्य

छूते आकाश

छूते धरती

छूते छूते सागर

छूते छूते वायु

खुदको कितना विशाल करता गया

खुदको कितना ब्रह्म करता गया

समाते समाते किसीका श्वास हो गया

समाते समाते किसीका विश्वास हो गया

समाते समाते किसीका धर्म हो गया

समाते समाते किसीका प्रेम हो गया

हे भागवत!

मुझको मुझमें एकात्म करके तु परब्रह्म हो गया

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे भारत माता!

हे हिमालय पिता!

संतान हूँ मैं ऐसे पुरुषार्थ का

जो हर रज जगाये एकता

जो हर कण जगाये पौरुषत्वता

जो हर लहर जगाये निखालसता

जो हर बूँद जगाये साक्षरता

जो हर किरण जगाये विशुद्धता

जो हर द्रष्टि जगाये समानता

जो हर स्वर जगाये ॐता

जो हर साथ जगाये संपता

जो हर उष्मा जगाये यज्ञता

जो हर गूँज जगाये वीरता

जो हर क्रिया जगाये निश्चिंतता

जो हर सेवा जगाये निस्वार्थता

जो हर निति जगाये कुशलता

जो हर पूजा जगाये ब्रह्मता

जो हर विचार जगाये विद्वता

जो हर राग जगाये निःसंदेहता

जो हर रस जगाये माधुर्यता

जो हर निधि जगाये सर्वोत्तमता

जो हर अक्षर जगाये साक्षरता

जो हर कला जगाये सौंदर्यता

जो हर ऋचा जगाये वेदांतता

जो हर श्रुति जगाये वेदता

जो हर तत्व जगाये प्रज्ञानता

जो हर घडी जगाये सत्यता

जो हर स्पर्श जगाये पवित्रता

जो हर कर्म जगाये सिद्धांतता

जो हर फल जगाये सार्थकता

जो हर सूत्र जग...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तु सत्य तु सत्य तु सत्य

हा हा तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसा सोचु ऐसा कहु ऐसा करु

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसा करे ऐसा विचारे ऐसा करावे

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसा दिखे ऐसा अनुभवे ऐसा पाये

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसा चले ऐसा समझे ऐसा सीखे

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसा निर्णय ऐसा नियम ऐसा व्यवहार

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसी स्थिति ऐसी व्यवस्था ऐसी क्षमता

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसी शक्ति ऐसी कुशलता ऐसी कुशाग्रता

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसा भूतकाल ऐसा वर्तमान ऐसा भविष्य

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसी मान्यता ऐसी कक्षा ऐसी द्रष्टि

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसा साधन ऐसा परिधान ऐसा धर्म

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसा कथन ऐसा वचन ऐसा कर्म

तो भी तु सत्य तु सत्य तु सत्य

ऐसा रंग ऐसा संग ऐसा अंग

तो भी तु सत्य तु सत्य तु स...

हम सही जीवन जी ही सकते है ।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारा नयन

हमारा मन

हमारा तन

हमारा धन

हमारा आँगन

हमारा आँचल

हमारा आश्रम

हमारा धरण

हमारा शरण

हमारा चरण

हमारा वरण

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बिलकुल योग्यता पूर्वक समय के समन्वय से उर्जित करते जाये तो न केवल संसार की असमंजस का असर हमें स्पर्शता और न कोई समय संजोग परिस्थिति हमें कोई हानि पहुंचाती।

गौर करना हम जब भी भी कोई असमंजस की असर और समय संजोग परिस्थिति हमें हानि पहुंचाते है वह कहीं हमारे आसपास से ही उठती है, और बस सदा उनमें उलझे हुए रहते है

द्रष्टि से

मान्यता से

रोग से

अर्ध वैचारिकता से

अस्वच्छता से

असंयम से

मोह से

अवैज्ञानिक धारणा से

अयोग्य शरणागति से

अनीति चलन से

असंवैधानिक लग्न से

हम पूर्व जन्म के कर्म - हमारा भाग्य - हमारी गैरसमज - हमारा समय - हमारी प्रकृति - हमारा तर्क - हमारा कुसंग - हमारी मान्यता के उपर दोषारोपण करते है - जो...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझसे दूर रहो हे सांवरिया

मुझसे दूर रहो हे सांवरिया

पास न आना साथ न आना

निकट न रहने की कसम खाना

ओ सांवरिया

मुझसे दूर रहना हे सांवरिया

मुझसे दूर रहना हे सांवरिया

यमुना के तीर दूर

मथुरा के महल दूर

वृंदावन की बिरह गली में

ढूँढे फिरु तडप तडप कर

मुझसे दूर रहो हे सांवरिया

मुझसे दूर रहो हे सांवरिया

नैन से तस्वीर दूर

यादों से लीला दूर

कैसे प्रीत से दिल छू लिया

कहां कहां भटक भटक रहुं

मुझसे दूर रहना हे सांवरिया

मुझसे दूर रहना हे सांवरिया

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जितना तडपु कितना भटकु

जितना दूर कहीं भी दूर हूँ

निकट निकट तु ही बेकरुर

न नैन मूंद पाओगे

न बंसी बजा पाओगे

साँस चूभ चूभ कर

कहीं न रास पाओगे

सोच लेना!

मैं भी राधा हूँ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

माँ समझते है

संस्कृति का पार्दूभाव सिंचित करते है

तपो धरातल है

जीवन धारा समझते है

हर ख्वाहिश की पूर्णता पोषक है

उन्हें बाँधना

मृतप्राय करना

न कोई विज्ञान अपना कर

न कोई गणित गुण कर

न कोई प्राकृतिक सिद्धांत समझ कर

न कोई जागृतता समझ कर

न कोई रीत अपना कर

न कोई पद्धति रच कर

न कोई भविष्य प्रयोजन कर

बस केवल अनुकरण

बस केवल महतम् लोकनिर्माण

जो न मानस समझ सके

जो न संस्कृति समझ सके

जो न प्रकृति समझ सके

जो न सृष्टि का सिद्धांत समझ सके

जो न तप धर्म का संस्थापन समझ सके

ऐसे नेतृत्व में तो

बरबाद ही बरबाद

खुंवार ही खुंवार

गँवा ही गँवा

गरीब ही गरीब

नादार ही नादार

कंगाल ही कंगाल

सच! ऐसा ही हाल है हमारे देश का

जो हर नदी को बांधते है

माँ कहते है पर हर तरह से धिक्कारते है

गंगा को छूआ नर्मदा को छूआ

यमुना को छुआ सरस्वती को छूआ

गोदावरी को छूआ कृष्णा को छूआ

कौनसी ऐसी नदियाँ है ...

"हमारा मत - हमारा अधिकार"

संविधान के अनुसार हम भारत के लोकशाही गणतंत्र से हमारी नागरिकता से हमारा मताधिकार सर्वोच्चता प्राप्त करता है।

यह अधिकार का उपयोग हमें अवश्य करना ही चाहिए - जो अधिकार का उपयोग करता है वो ही योग्य और स्वतंत्र नागरिकत्व का आनंद उठा सकता है।

हमारा मत - हमारी जागृतता का प्रतीक है और जो जागृत है वो ही अपनी इच्छित संवैधानिक सरकार को अपनी योग्यता अनुसार अपने सेवक को अपने जीवन की व्यवस्था के लिए चून कर हमारा जीवन को सरल कर सकते है।

यह समझना अति आवश्यक है।

हम ही हमारा मत से हमारा जीवन संवार सकते है - देश को योग्य दिशा दे सकते है।

हम देश संचालित पक्षों के आधारित सेवक संस्थान तय करते है - उनमें कोई नि:संकोच या नि:संदेह नही है, सत्य तो ऐसा ही है कि हम निडरता से और निष्पक्षता से हम अपने सेवक को चून कर अपने जीवन का कार्य भार सौंप सकते है - हमा...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जो विचार सार्थक कर जाये वही योग्य मनुष्य

जो संकल्प सिद्ध कर जाये वही योग्य मनुष्य

जो संकेत सकल जाये वही योग्य मनुष्य

जो क्षण संवर जाये वही योग्य मनुष्य

जो पल संभल जाये वही योग्य मनुष्य

जो घडी धैर्य जाये वही योग्य मनुष्य

जो सिद्धांत धर जाये वही योग्य मनुष्य

जो वचन पूर्ण जाये वही योग्य मनुष्य

जो अक्षर शास्त्र जाये वही योग्य मनुष्य

जो द्रष्टि संस्कृत जाये वही योग्य मनुष्य

जो संस्कार विशुद्ध जाये वही योग्य मनुष्य

जो मन स्थितिप्रज्ञ जाये वही योग्य मनुष्य

जो तन अपरस जाये वही योग्य मनुष्य

जो धन विकसित जाये वही योग्य मनुष्य

जो धर्म संस्थापन जाये वही योग्य मनुष्य

जो कर्म पुरुषार्थ जाये वही योग्य मनुष्य

जो वर्ण अविचल जाये वही योग्य मनुष्य

जो इन्द्रियां संस्कार जाये वही योग्य मनुष्य

जो स्वर सुवचन जाये वही योग्य मनुष्य

जो साँस पवित्र जाये वही योग्य मनुष्य

जो उच्छ्वास ते...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"जीवन साथी"

जी + वन + साथी

जी - जीना

वन - जगत एक वन है

साथी - सदा साथ निभाना

हम सर्व सोचें - कौन है जिसने ऐसा जीवन साथ साथ जीया

सोच लो

सैद्धांतिक से विश्लेषण करेंगे

"Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हर क्षण में उर्जा है जो हमें स्वस्थ रखे

हर पल में संकेत है जो हमें सकारात्मक रखे

हर विचार में विद्वता है जो हमें शिक्षित रखे

हर कार्य में श्रेष्ठता है जो हमें समर्थ रखे

हर भाव में समर्पण है जो हमें भक्त रखे

हर विद्या में साक्षरता है जो हमें मार्गदर्शक रखे

हर उच्चारण में आशीर्वाद है जो हमें सदा सुरक्षित रखे

हर निष्ठा में संगठन है जो हमें साथ साथ रखे

हर व्यवहार में निरपेक्षता है जो हमें अपना रखे

हर मिलन में निस्वार्थता है जो हमें आनंदित रखे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे पुष्टि प्रवर्तक!

प्राकट्य स्वस्वरुप दंडवत प्रणाम करिष्येती 🌷🙏🌷

" श्री वल्लभाचार्यजी "

" श्री महाप्रभुजी "

" श्री अग्निकुमारजी "

" श्री वैश्वानरजी "

" श्री सुबोधाचार्यजी "

" श्री तनुनवत्वमेतावताजी "

" श्री ऋधिरग्निकुमारजी "

" श्री कृष्णधरासूतजी "

" श्री मोहितासुरमानुषजी "

" श्री कृष्णज्ञानदोगुरुजी "

" श्री गोपीशवल्लभीकृतमानवजी "

" श्री कृपादृग्वृष्टिसंहृयष्टदासदासीप्रियजी "

" श्री वाक् सीधुपूरिताशेषसेवकजी "

" श्री वाक्पतिजी "

" श्री वाक्पतिर्बिबुधेश्वरजी "

" श्री सर्वशक्तिधृक्जी "

" श्री स्वान्वयकृत् पिताजी "

" श्री कृष्णहार्दवित् जी "

" श्री चतुर्वर्गविशारद जी "

" श्री स्वकीर्तिवर्धनस्तत्तवसूत्रभाष्यप्रदर्शक जी "

" श्री अग्निर्ब्रहवादनिरुपक जी "

" श्री कृष्णरसार्थिभि जी "

" श्री देहदेशपरित्यागी जी "

" श्री तृतीय लोकगोचर जी "

" श्री कृष्णदासस्य जी "

" ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" निर्वाह " बहोत सोचना

" निर्वाह " सोचते ही रहना

" निर्वाह " गहराई से सोचना

" निर्वाह " अध्ययन करना

" निर्वाह " इतिहास के पन्ने पलटाना

" निर्वाह " समाज के कहीं चरित्रों टटोलना

" निर्वाह " अपने आप को निचोडना

" निर्वाह " सूत्रों से सांधना

" निर्वाह " हर तर्क से धरना

" निर्वाह " जन्म से जन्मांतर तक तरासना

सच! हम क्या है?

सच! हम कैसे है?

सच! हम कौन है?

" निर्वाह " कैसे निर्वाह?

" निर्वाह " कितने निर्वाह?

" निर्वाह " क्या क्या निर्वाह?

" निर्वाह " किसे न कहे निर्वाह?

ओहह भगवान! निर्वाह! निर्वाह! निर्वाह!

कैसे बंधन से बंधा है " निर्वाह "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे नही पता था कि

मेरा जन्म और जीवन समय और संजोगो की धारा से सिंचित होता होता सतयुग त्रेतायुग द्वापरयुग और कलयुग में जीयेगा।

कहीं प्रकार के स्वभाव, कहीं प्रकार के विचार, कहीं प्रकार के धर्म, कहीं प्रकार की विद्या, कहीं प्रकार के अर्थोज्ञान, कहीं प्रकार की मान्यता, कहीं प्रकार के सिद्धांत मुझे कहाँ ले जायेगा!

हर विचार पर चौराहे, हर अर्थ पर चौराहे, हर बात पर चौराहे, हर ज्ञान पर चौराहे, हर भाव पर चौराहे, हर रीत पर चौराहे, हर मान्यता पर चौराहे, हर चारित्र्य पर चौराहे, हर समय पर चौराहे, हर परिस्थिति पर चौराहे, हर धर्म पर चौराहे तो कौनसी दिशा अपनाना?

सदा दिशाहीन - दिशाविहीन - दिशाशून्य - दिशाविंचित ही हमारा जीवन।

सच! कैसे तय करें - निर्णय करें!

ओहह! परमेश्वर!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" आगे निकलना "

धैर्य से सोचना

गंभीरता से सोचना

गहराई से सोचना

अध्ययन से सोचना

शैक्षणिक से सोचना

पढाई में आगे निकलना

व्यापार में आगे निकलना

व्यवसाय में आगे निकलना

व्यवहार में आगे निकलना

आर्थिकता में आगे निकलना

भौतिकता में आगे निकलना

धर्मता में आगे निकलना

कुशलता में आगे निकलना

हरीफाई में आगे निकलना

अर्थोपार्जन में आगे निकलना

कहने में आगे निकलना

समझने में आगे निकलना

दिखावे में आगे निकलना

बातों में आगे निकलना

शिक्षा में आगे निकलना

संबंध में आगे निकलना

जानकारी में आगे निकलना

रीत में आगे निकलना

आगे

बस आगे

सबसे आगे

सर्वत्र से आगे

क्या हम आगे निकलते है?

धैर्य से सोचना

गंभीरता से सोचना

गहराई से सोचना

अध्ययन से सोचना

शैक्षणिक से सोचना

सच में हम आगे निकलते है?

नही कभी नही

कथित नही

कैसे भी नही

हम आगे निकल ही नही सकते

बस! आज यही ही धून है

आगे निकल जाये

आगे निकल...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम सदा हमारी संस्कृति के लिए गर्व करते है, और सदा कहीं और संस्कृति से तुलनात्मक करते रहते है।

ऋषि मुनियों के आध्यात्म से घडी और रची हुई संस्कृति को हम शास्त्रार्थ और अध्ययन करते करते हम खुद अपने आप को सिंचित करते करते हमारा जीवन उत्तम समझते समझते योग्य चारित्र्य की ओर गति करते रहते है, यही वारसो हम हमारें धर्म, शिक्षा और आध्यात्मता से हमारे कौटुंबिक और सामाजिक पात्रों को प्रदान करते रहते है।

सही है! सोच लो!

हम सुबह मंदिर जाते है

हम सुबह सेवा पूजा पाठ उपासना करते है

हम दिन भर अर्थोपार्जन के लिए यथा योग्य करते है

हम दूपेर में सेवा सामग्री करते है

हम शाम को संध्या वंदना दर्शन करते है

हम रात को सत्संग करते है

यही ही सदा हमारा नित्य क्रम है।

सही है! यह हमारी नित्य चर्या जीवन की!

हाँ!

तो अब बताओ इनमें कोई संसार आ सकता है?

तो अब कहो इनमें कलयुग अपनी अंद...

कितने भाग्यशाली है हम

जो हमारी धरोहर पर जगत नियंता के अवतारों धरे

कितने भाग्यशाली है हम

जो हमारी भूमि पर सिद्धांत जगत पुरुषार्थ के आचार्यों प्राकट्य हुए

कितने भाग्यशाली है हम

जो हमारी संस्कृति का संरक्षण जगत विज्ञान के ऋषियों ने सिद्ध किये

कितने भाग्यशाली है हम

जो हमारी धरती पर सर्व शक्ति पीठ जननी हमारा सिंचन करे

कितने भाग्यशाली है हम

जो हमारी सेवा पद्धति से हमारे धर्म संस्थापक सदा हमारे साथ रहे

कितने भाग्यशाली है हम

जो हमारे मात-पिता भाई बंधु पौत्र पौत्री सदा हमारे आँगन खिले

कितने भाग्यशाली है हम

जो जागतिक प्रकृति सर्वानंद हमारा ख्याल करे

कितने भाग्यशाली है हम

जो सूर्य चंद्र दिन रात हमारा परिवर्तन करे

हाँ! सच हम यही देश के मोक्ष तत्व है जिस देश में गंगा बहती है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूर्य को तो सभी ने देखा ही होगा

तो तो सभी ने उनकी उर्जा को भी पाया ही होगा

चंद्र को तो सभी ने देखा ही होगा

तो तो सभी ने उनकी शीतलता को भी पीया ही होगा

बरसात में तो सभी कोई भीगे ही होंगे

तो तो सभी ने उनकी बूँद को बौछारा ही होगा

रंग से तो सभी कोई रंगाये ही होंगे

तो तो सभी ने उनकी रंगाई का रंग खुद को भाया ही होगा

संगीत से तो सभी झुमे ही होंगे

तो तो सभी ने उनकी मधुरता को लूटा ही होगा

तो तो अपनी साँस की उष्मा को पहचानते ही होंगे

तो तो अपनी बिखरायी जुल्फों के साये लहराते ही होंगे

तो तो अपनी विरह की धारा को बरसाया ही होगा

तो तो अपने तन मन धन के रंग को श्याम रंग से रंगा ही होगा

तो तो अपनी धडकन के सूर को सरगम में डूबोया ही होगा

सच! यही ही आनंद है

सच! यही ही परमानंद है

सच! यही ही आत्मानंद है

सच! यही ही प्रेमानंद है

हाँ! मेरे प्रिये!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारा जन्म और जीवन के कहीं ऐसे संस्कार और सिद्धांत हम नही पहचानते है और नही अपनाते है, जो हमें दु:खी, अस्त व्यस्त, अयोग्य, रोगी और अस्थिर रखते है।

जैसे हम गोत्र को नही जानते और मानते है। यह जानना और समझना विज्ञान है - मान्यता नही है।

जैसे हम कोई भी वर्ण में जन्म धरे हो, ब्राह्मण को ही नक्षत्रों और ग्रहों की स्थिति जाननी और समझनी है, हमें नही!

यह अज्ञानता है, हमने चाहे क्षत्रिय या वैश्य वर्ण में जन्म पाया है तो मुझे ऐसी कुंडली से क्या जानना और समझना! नही नही।

हरेक मानव जन्म धारी को यह जानना और समझना आवश्यक है पर जो आजकल जो अज्ञानी कर्मकांडी अयोग्य ब्राह्मण वर्ण में जन्म धरा है, जिसको पहचान कर खुद को दूर रख कर उनसे अस्पृश्य रह कर और उनकी मान्यता में न भरमाकर खुद को नष्ट नही करना है।

हरेक की कुंडली में मंगलता और योग्यता है ही, यही कुंडली ही धरे हम सर्व श्रेष्ठ है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चले रहे

चले गये

चल बसे

कौन रुकता है?

कौन ठहरता है?

कौन बसता है?

कौन निभाता है?

नही साथ चलते

नही साथ रहते

नही साथ बसते

नही साथ निभाते

आज ये गया

आज वह गया

आज यह न रहा

आज वह न रहा

ऐसे चले

ऐसे छले

ऐसे ढले

न संकेत

न कहे

न रीत

बस गये

बस बसे

बस

रह गये हम

रुक गये हम

ठहर गये हम

हाँ! ऐसे

हाँ! अकेले

सब ऐसे!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सच! है सत्य जो सत्य जगाये

ऐसे चले रहने से

ऐसे चले गये से

ऐसे चल बसने से

ऐसे चल स्वीकारने से

ऐसे चल समझने से

ऐसे चल पहचानने से

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सदा मंगल हो - सदा शुभ हो

" गृह - गृहस्थ "

आज यह शब्दों का सही अर्थ तुट गया

आज यह शब्दों का सही अर्थ लुप्त गया

आज यह शब्दों का सही अर्थ नष्ट गया

आज यह शब्दों का सही अर्थ खो गया

आज यह शब्दों का सही अर्थ भ्रष्ट गया

हमारे गृह में सभ्यो बढे

हमारे गृह में सभ्यता बढी

हमारे गृह में शिक्षा बढी

हमारे गृह में अर्थोपार्जन बढे

हमारे गृह में व्यवस्था बढी

हमारे गृह में मिलकत बढी

हमारे गृह में आचार बढे

हमारे गृह में विचार बढे

हमारे गृह में रीतें बढी

हमारे गृह म रिश्ते बढे

हमारे गृह में व्यवहार बढे

हमारे गृह में विश्लेषण बढे

हमारे गृह में क्रिया बढी

हमारे गृह में मान्यता बढी

हमारे गृह में रीति रिवाज बढे

हमारे गृह में सुरक्षा बढी

हमारे गृह में कुशलता बढी

हमारे गृह में कार्यक्षमता बढी

हमारे गृह में कार्यशैली बढी

हमारे गृह में औषधि बढी

हमारे गृह में असमंजस बढी

हमारे गृह में अनियमितता बढी

हमारे गृह मे...

" गृह - गृहस्थ "

आज यह शब्दों का सही अर्थ तुट गया

आज यह शब्दों का सही अर्थ लुप्त गया

आज यह शब्दों का सही अर्थ नष्ट गया

आज यह शब्दों का सही अर्थ खो गया

आज यह शब्दों का सही अर्थ भ्रष्ट गया

हमारे गृह में सभ्यो बढे

हमारे गृह में सभ्यता बढी

हमारे गृह में शिक्षा बढी

हमारे गृह में अर्थोपार्जन बढे

हमारे गृह में व्यवस्था बढी

हमारे गृह में मिलकत बढी

हमारे गृह में आचार बढे

हमारे गृह में विचार बढे

हमारे गृह में रीतें बढी

हमारे गृह म रिश्ते बढे

हमारे गृह में व्यवहार बढे

हमारे गृह में विश्लेषण बढे

हमारे गृह में क्रिया बढी

हमारे गृह में मान्यता बढी

हमारे गृह में रीति रिवाज बढे

हमारे गृह में सुरक्षा बढी

हमारे गृह में कुशलता बढी

हमारे गृह में कार्यक्षमता बढी

हमारे गृह में कार्यशैली बढी

हमारे गृह में औषधि बढी

हमारे गृह में असमंजस बढी

हमारे गृह में अनियमितता बढी

हमारे गृह मे...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वंशीधरं तोत्त्रधरं नमामि मनोहरं मोहहरं च कृष्णम्।

मालाधरं धर्मधुरन्धरं च पार्थस्य सारथ्यकरं च देवम्।।

कर्तव्यदिक्षां च समत्वशिक्षां ज्ञानस्य भिक्षां शरणागतिं च।

करोति दूरं पथिविघ्नबाधां ददाति शीघ्रं परमात्मसिद्धिम्।।

हे कृष्ण! हे प्रिये! तु क्या है?

तुने जन्म धरा लौकिकता से केद खाने में

तुने लीला करी अलौकिकता से प्रकृति के हर आँगन में

तुने सिद्धांत धरा जीवन का युद्ध भूमि में

तुने विराटता धरी सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्व में

हे प्रभु! सच! तु कैसा हे रे!

न कोई भेद - न कोई खेद

न कोई तिरस्कार - न कोई आविष्कार

न कोई अधिकार - न कोई विकार

न कोई काल - न कोई छल

हर हर में नित्य निरंतर एकरस एकरुप

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

धैर्य से समझे

अध्ययन से समझे

विज्ञान के सिद्धांत से समझे

सूर्य

आकाश

वायु

धरती

जल

खुद तत्व और अभिन्न तत्वों से भरे

खुद तत्व की मूल रचना का मूल सिद्धांत

खुद तत्व की मूल रचना का मूल कारण

खुद तत्व की मूल ऊर्जा से परिवर्तन

खुद तत्व की गति से परिवर्तन

खुद तत्व के आकार से परिवर्तन

खुद तत्व के स्वभाव से परिवर्तन

खुद तत्व की गति की क्षमता से परिवर्तन

खुद तत्व का प्रभाव अंतर का परिवर्तन

खुद तत्व से भिन्न तत्त्वों के अंतर से परिवर्तन

हर भिन्न और अभिन्न आकर्षण से परिवर्तन

उनमें ही क्षण क्षण काल से परिवर्तन

उनमें ही मूल से घटित या अघटित मात्रा के संयोजन और वियोजन से परिवर्तन

भिन्न अभिन्न तत्वों की उत्पत्ति से परिवर्तन

भिन्न अभिन्न तत्वों की उत्पत्ति के अनेक सिद्धांत से परिवर्तन

अर्थात मूल तत्व और भिन्न भिन्न काल प्रवाह से परिवर्तन

अर्थात मूल तत्व और भिन्न............................

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!

छूप नही सकते कहीं तुमसे हम

हर तरफ है निगाहें तेरी

पर

नही है निगाहें हमारी ओर तेरी

नजर उठाये जहां जहां

हर तरफ तु छूपा रहता है

पर

हम भी तेरे प्रिये है

छूपता रहे कहीं कहीं

पर

एक बार तो बसोगे यह निगाहों में

फिर चाहे कितना छूपोगे कहीं

नहीं जा पाओगे दूर कहीं

चाहे कितने भी परदे में हो

हम तुम्हें पायेंगे तुम हमें पाओगे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

"संसार की इच्छा और अपेक्षा कभी पूर्ण नही होती है ।"

यह एक ऐसा विधान है जो कोई भी जीव हो या योनि हो या सन्यासी हो।

कोई निष्णात हो

कोई प्राध्यापक हो

कोई वैज्ञानिक हो

कोई आध्यात्म हो

कोई शिक्षित हो

कोई अशिक्षित हो

कोई ज्ञानी हो

कोई अज्ञानी हो

कोई पुरुषार्थी हो

कोई न्यायिक हो

कोई विशिष्ट हो

कोई संत हो

कोई भक्त हो

कोई विकसित हो

कोई नियमित हो

कोई नित्य हो

कोई प्रेमी हो

आदि सर्व अधूरे है।

हाँ ! चाहे अधिक हो या कुछ भी न हो

पर वह अनित्य है

पर वह अन्याश्रयी है

पर वह प्रतिबिंब है

पर वह परिवर्तित है

पर वह अनिश्चित है

"Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह अलौकिक सूत्र हमने महतम् सोच कर आपको ध्यान से प्रेरित करने रुबरु किया है, अवश्य पढ कर सोचे........

शायद कुछ जाग जाय........

" संसार की इच्छा और अपेक्षा कभी पूर्ण नही होती है ।"

यह एक ऐसा विधान है जो कोई भी जीव हो या योनि हो या सन्यासी हो।

कोई निष्णात हो

कोई प्राध्यापक हो

कोई वैज्ञानिक हो

कोई आध्यात्म हो

कोई शिक्षित हो

कोई अशिक्षित हो

कोई ज्ञानी हो

कोई अज्ञानी हो

कोई पुरुषार्थी हो

कोई न्यायिक हो

कोई विशिष्ट हो

कोई संत हो

कोई भक्त हो

कोई विकसित हो

कोई नियमित हो

कोई नित्य हो

कोई प्रेमी हो

आदि सर्व अधूरे है।

हाँ ! चाहे अधिक हो या कुछ भी न हो

पर वह अनित्य है

पर वह अन्याश्रयी है

पर वह प्रतिबिंब है

पर वह परिवर्तित है

पर वह अनिश्चित है

"Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"संसार की इच्छा और अपेक्षा कभी पूर्ण नही होती है ।"

ऐसा क्यूँ?

ऐसा क्या है हमारा जन्म, जीवन, प्रकृति और संस्कृति में की हम ऐसे चक्कर में भटकते ही रहे और भटकते ही रहे।

"श्री वेद" कहते है - संयमन नियमन विज्ञान

"श्री मद् भागवत गीता" कहती है - कर्म का सिद्धांत

"श्री मद् भागवत" कहता है - पुरुषार्थ का संस्करण

"श्री उपनिषद" कहते है - परा अपरा सिद्धांत

"श्री महापुराण" कहते है - धर्म चरित्रों से संस्थापन

"श्री वेदांत" कहता है - सिद्धांतों की अनुभूति

हर एक में मान्यता

हर एक में विश्लेषण

हर एक में विभिन्नता

हर एक में विशिष्टता

हर एक में विघटितता

हर एक में विपरीतता

अभ्यास करना

अमान्यता से

जागृतता से

बिना अंधश्रद्धा से

बिना जन्म जाती से

विज्ञान से

भाव से

योग से

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह नैन मैंने क्यूँ पाये?

नजर निखरते निखरते मैं नजारा हो गया

यह कर्ण मैंने क्यूँ पाये?

कवन सुनते सुनते मैं कारण हो गया

यह होठ मैंने क्यूँ पाये?

वेण कहते कहते मैं लवारा हो गया

यह मन मैंने क्यूँ पाया?

निरंतर नितरते नितरते मैं मनतृष्ण हो गया

यह तन मैंने क्यूँ पाया?

भूख लूटते लूटते मैं तनभूख हो गया

यह हस्त मैंने क्यूँ पाया?

भिख लेते लेते मैं भिखारी हो गया

यह पैर मैंने क्यूँ पाया?

डग भरते भरते मैं डकैत हो गया

शांतता से सोचना

तर्क जोड के सोचना

कर्म करते अनुभवना

एकांत धर के ध्यानना

ओहह! कैसे जीते है हम?

ओहह! कितने शिक्षित है हम?

ओहह! कैसे धर्म धरणी है हम?

ओहह! कितने संस्कारी है हम?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जगत वोही

आकाश वोही

धरती वोही

सूरज वोही

वायु वोही

सागर वोही

हाँ! पर साथ साथ पल पल परिवर्तन

ऐसे ही हर तत्व में परिवर्तन

ऐसे ही हर जीव में परिवर्तन

ऐसे ही हर प्रकृति में परिवर्तन

तो समय में परिवर्तन

तो हर योनि में परिवर्तन

तो हर मन में परिवर्तन

तो हर स्वभाव में परिवर्तन

हाँ! तो धारा चलने दो - बहने दो

हाँ! तो प्रभाव पडने दो - छाने दो

हाँ! तो स्पर्श होने दो - छूने दो

हाँ! तो ज्ञान अपनाने दो - मानने दो

हाँ! तो भाव जागने दो - जगाने दो

रीत यही है संसार की

जो होता है होने दो

रीत यही है जीवन की

जो परंपरा है चलने दो

पर! है कुछ कहीं संस्कृति में

पर! है कुछ कहीं आध्यात्म में

पर! है कुछ कहीं धर्म में

पर! है कुछ कहीं कर्म में

जो सदा रक्षे कैसे समय में

जो सदा शिक्षे कैसे प्रभाव में

जो सदा सिद्धे कैसे स्पर्श में

जो सदा स्थिरे कैसे ज्ञान में

जो सदा उत्कृष्टे कैस...

कितनी मान्यता पर

कितनी धारणा पर

कितनी अपेक्षा पर

कितनी महत्वकांक्षा पर

कितनी रीति रिवाज पर

कितनी धर्मता पर

कितनी ज्ञाती पर

कितनी जन्म जाती पर

कितनी वैचारिकता पर

कितनी व्यवस्था पर

कितनी व्यवहारों पर

कितनी व्यवसायिकता पर

कितनी अनुशासन पर

कितनी अनुसंधान पर

कितनी अनुमान पर

कितनी अनुसाधन पर

कितनी पारिवारिकता पर

कितनी ज्ञानात्मक पर

कितनी भावनात्मक पर

कितनी माध्यमिकता पर

कितनी स्वनिर्णायक पर

कितनी स्वनिर्भय पर

कितनी स्वनिर्मित पर

कितनी आधारित पर

कितनी संवेदना पर

कितनी विधाता पर

जिंदगी हमने रचाई है

जिंदगी हमने बसाई है

जिंदगी हमने घडाई है

जिदंगी हमने संवारी है

जिंदगी हमने बनाई है

जिंदगी हमने जगाई है

जिंदगी हमने सिंचाई है

जिंदगी हमने नवाजी है

जिंदगी हमने नचाई है

जिंदगी हमने मनाई है

जिंदगी हमने लूटाई है

जिंदगी हमने भूलाई है

जिंदगी हमने लगाई है

जिंदगी हमने भरमाई है

जिं...

आज

यह आकाश मुझसे है

यह धरती मुझसे है

यह जल मुझसे है

यह वायु मुझसे है

सोच लो यह सूरज मुझसे नही

(अर्थात मैं नियंत्रण नही कर सकता हूँ)

यह दुनिया मुझसे है

यह जगत मुझसे है

यह संसार मुझसे है

यह संस्कृति मुझसे है

सोच लो यह प्रकृति मुझसे नही

(अर्थात मैं उत्पन्न नही कर सकता हूँ)

यह धर्म मुझसे है

यह कर्म मुझसे है

यह जीवन मुझसे है

यह प्रमाण मुझसे है

सोच लो यह सिद्धांत मुझसे नही

(अर्थात मैं रच नही सकता हूँ)

यह भविष्य मुझसे है

यह वर्तमान मुझसे है

यह इतिहास मुझसे है

यह युग मुझसे है

सोच लो यह समय मुझसे नही

(अर्थात मैं योजीत नही सकता हूँ)

यह रोग मुझसे है

यह भोग मुझसे है

यह योग मुझसे है

यह जोग मुझसे है

सोच लो यह नियोग मुझसे नही

(अर्थात मैं समतल नही कर सकता हूँ)

यह जन्म मुझसे है

यह मृत्यु मुझसे है

यह प्रीत मुझसे है

यह पाप मुझसे है

सोच लो यह सृष्टि मुझसे नही

(अर्थात...

भीषण गरमी

अति तीव्र गरमी

असहृय गरमी

अगन अगन गरमी

सूरज देवता क्रूर

प्रकृति निष्ठुर

धरती व्याकुल

त्राहि माम त्राहि माम

प्रकोप प्रकोप

न पानी न छाया

बूँद बूँद की प्यास

घूँट घूँट की आश

पत्ते पत्ते की साँय

हर नजर बिखराय

हर कोई तरसे तरस छिपाने

हर कोई भटके तृष्णा मिटाने

कोई कहता कलयुग असर

कोई कहता पाप स्पर्श

चारे ओर शोर अघोर

खुद खुद को छूपाये

खुद अपने को गंवाये

अपने अपने को घवाये

आह भरते जाये

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

इन्होंने किया उन्होंने किया

हमने किया हमारो ने किया

गैरों ने किया ओरों ने किया

गिराते गिराते खुद को गिराया

फेंकते फेंकते खुद को बिखुटाया

गरमी गरमी से सूरज को डाँटा

गरमी गरमी से प्रकृति को लूटा

गरमी गरमी से कुँजे को फूटा

गरमी गरमी से कुंभ को जुटा

गरमी गरमी से वाव को खूँटा

गरमी गरमी से तालाब को भूठा

गरमी गरमी से सरोवर को तुटा

गरमी गरमी से नदी को बूठा

गरमी गरमी से सागर को गूँठा

न ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वट सावित्री "

अभी अभी दो दिन पहले हमारी संस्कृति का निराला व्रत गया। हमारी हिन्दु संस्कार और संस्कृति का गौरव और आत्मीय सन्मान है।

पर - आज यह संस्कार और संस्कृति पर अंधकार है।

आज केवल एक वार्ता हो गया - एक प्रथा हो गया - एक मान्यता हो गई। यह व्रत का संस्कार सिद्धांत - यह व्रत की गुणवत्ता - यह व्रत का औचित्य अदृश्य हो गया - निर्माल्य हो गया - अधर्म हो गया - खंडित हो गया - सतीत्व भंग गया - अंश दूषित हो गया - मृत हो गया।

ऐसा न समझना - मैं नकारात्मक हो रहा हूँ - मैं मर्यादा भंग कर रहा हूँ - मैं आज के वैज्ञानिक विचारों विरुद्ध हूँ - मैं आज की दोषित धर्मता दर्शा रहा हूँ - मैं सिद्धांत विहीन दिशा जीवन को नग्न कर रहा हूँ - मैं आज की शिक्षित मान्यता को अविश्वसनीय और गैर जिम्मेदार ठहराता हूँ - मैं पौराणिक वार्ता की अंधश्रद्धा को उजागर कर रहा हूँ। नही नही।

मैं के...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वट सावित्री "

वट अर्थात वनस्पति

सावित्री - एक सती

जो हम सर्वे इनसे वाकिफ है।

पर मैंने जो आगे कहा उनके अनुसंधान से मैं जो जता रहा हूँ - वैज्ञानिक सिद्धांत

न कोई मान्यता

न कोई अंधश्रद्धा

न कोई इतिहास

न कोई उदाहरण

न कोई वार्ता

हमारी संस्कृति में हर सिद्धांत सत्यता से ही प्रमाणित है - मान्यता और अंधश्रद्धा से रचीत नही है।

हाँ! मान्यता, अंधश्रद्धा और अज्ञानता के वैचारिक मतभेदो से सत्य छिन्न भिन्न करने की कोशिश करते है कोई पर सत्य मिटा सकते नही।

आज मान्यता, अंधश्रद्धा और अज्ञानता के वैचारिक मतभेदो से यह सत्य सिद्धांत को छिन्न भिन्न करके मिटाने पर है और एक मान्यता से इन्हें निभाते रहते है, पर सत्यता नही मिटा पाये - जो कभी कोई भी प्रकार से जागृत हो ही जाती है।

वैज्ञानिक सिद्धांत से जता रहा हूँ की " वट सावित्री " एक इतना सचोट उदाहरण है हमारी श्रेष्ठ संस्कृती...........

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"वट सावित्री "

एक मनुष्य स्त्री अपने जीवन में अपने कर्म से अपने भाग्य - ब्रह्मांड प्रणाली - जीव शैली को परिवर्तित किया। अर्थात कर्म का ऐसा सिद्धांत जो सिद्धांत वैज्ञानिकता से साध्य हो गया।

वैज्ञानिक सिद्धांत है

जो सत्व तत्व अपनी अखंडितता से अपनी बाह्य और आंतरिक ऊर्जा को संनियमन विश्वास करके सत्व तत्व सिद्धांत का अनुशासन करे तो वह ब्रह्मांड के कोई भी सत्व तत्व को अपने विशुद्ध और पवित्र नि:संदेह द्रढ संकल्प से परम श्रेष्ठ देवत्व आत्माओं को नियंत्रण में कर सकता है।

जो सती सावित्री ने यह सिद्धांत प्रमाणित किया।

यह सिद्धांत उन्होंने वट से पाया था।

वट एक ऐसी वनस्पति है जो हर बूँद बूँद से हर पत्ते पत्ते से हर डाली डाली से और हर मूल मूल से वह पंच तत्वों का सिंचन करता है। यही सिंचन से सदा हम दीर्घायु, निरोगी, और सत्वगुण संस्कारी होते है जो सावित्री ने अपनी अखं...

सच! प्रेम!

नारी का प्रेम

क्या समझ है नर की

सच! प्रेम!

नर का प्रेम

क्या समझ है नारी की

सच! प्रेम!

नारी - नर के प्रेम

क्या समझ है संसार की

सच! संशय है

सच! स्वीकार्य है

सच! व्यवस्था है

सच! रीत है

सच! भिती है

सच! अपनाया है

सच! होता है

सच! रहता है

सच! करते है

सच! निर्वाहते है

सच! विचरते है

सच! जीते है

सच! क्या क्या है

कौन समझा राधा को

कौन समझा कृष्ण को

कितने जीव ऐसे जीये!

कितने संकल्प ऐसे जीये!

कितने वचन ऐसे जीये!

कितने वरण ऐसे जीये!

हे राधा! 🌷🙏🌷

हे कृष्ण! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चलना है हमें चलना है हमें

जैसे चले नदी धारा

चलना है हमें चलना है हमें

जैसे नदी कल कल

चलते चलते मिले कहीं कंकर

चलते चलते मिले कहीं डगर

मिलते मिलते कंकर हो हर हर

मिलते मिलते डगर हो दर दर

चलना है हमें चलना है हमें

जैसे नदी कल कल

चलना है हमें चलना है हमें

जैसे समय सररर् सररर्

चलते चलते छाये परछाये

चलते चलते पाये लहराये

परछे से पैर बढाये पर पर

लहरें से मन संवारे सर सर

चलना है हमें चलना है हमें

जैसे समय सररर् सररर्

हर हर कंकर निहार निहार शंकर

दर दर डगर गुहार गुहार प्रेम किशोर

शंकर शंकर जय शिव शंकर

किशोर किशोर जय प्रेम किशोर

जगाई सृष्टि कण कण जीवन

रंगाई सृष्टि रज रज आनंद

ऐसे ही चलना जैसे नदी धारा

ऐसे ही चलना जैसे समय न्यारा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

" निर्जला एकादशी "

कितनी सरलताएं है अपनी मान्यताओं में और हम बिना सोचे - बिना समझे अपना भी लेते है।

भीम जो सदा आहारी सदा भोजी सदा अन्नी

जैसे आजकल हम थोडा थोडा इतना इतना करके और इसमें कोई आमंत्रण कोई दावत कोई उत्सव कोई मनोरथ तो तो कहना ही क्या!

इतनी दवाईयां इतनी आप लेईयां में निर्जला एकादशी!

कोई कहता है - भीभ ने जन्म भर खाया है और कभी अनायास ऐसा जल में स्नान करते हो गया तो ....

कोई कुछ ओर कहता है - भीम के भोजन के लिए

सोचे - निरांत से सोचे क्यूँकि आज हमारी भी एकादशी ही है तो हमें अधिक भोजन पर्याय हमें अधिक श्री प्रभु स्मरण में रहना है तो अवश्य सोच सकते है!

1. सच में भीम ऐसा था?
2. आजतक हमारे जो भी शास्त्र है इनमें केवल भीम और कुंभकर्ण को अति आहारी बताया है - इसका सही अर्थ क्या हो सकता है?
3. भीम या कुंभकर्ण ऐसे होते तो क्या वह जैसे शूरवीरों की परंपरा में थे वह सत्य है?
4. क्या हम आज ऐसे भोगी भोजनी और आहारी है?
5. निर्जला एकादशी का सही मूल्यांकन क्या हो सकता है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नही थका हूं सत्य आचरण से
पर थक गया हूं असत्य चरण से

नही थका हूं पवित्र कर्मो से
पर थक गया अपवित्र व्यवहारों से

नही थका हूं निस्वार्थ भूमिका से
पर थक गया हूं स्वार्थ संबंधों से

नही थका हूं संस्कार शिस्त से
थक गया हूं कुसंस्कार नियमों से

नही थका हूं करुणा सेवा से
थक गया हूं निर्दयी मदद से

नही थका हूं विश्वास बंधनों से
थक गया हूं अविश्वास वचनों से

नही थका हूं श्रद्धा निश्चय से
थक गया हूं अंधश्रद्धा स्वीकार से

हे मानव! दानव दुष्ट दरिंदा से तु दुष्कर्मी हो
पर कोई घडी परिवर्तन लायेगा ही 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक - नकारात्मक

यह साधारण शब्द नही है, हम यही शब्दों से हमें पहचान सकते है।🌷🙏🌷

जन्म धरा - सीखते गये, समझते गये, सरखावते गये, स्वीकारते गये, खोते गये, छोडते गये, अनुगत करते गये, अपनाते गये, चलते गये

बोलते गये, कहते गये, लिखते गये, समझाते गये, चलाते गये

निहालते गये, सुनते गये, पढते गये, समझते गये, सरखावते गये, स्वीकारते गये

यही से हमारा मन, तन, धन और जीवन कक्षित होता है - सकारात्मक - नकारात्मक

जो हम उलझते नही - सरल सरल और सरलता से सब कुछ वहन करते है तो सकारात्मक🌷🙏🌷

हम सुलझते नही - तरल तरल और तरलता से सब कुछ वहन करते है तो नकारात्मक🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

“अबिगत गति कछु कहत न आये "

हमारी मन की गति

हमारे तन की गति

हमारे धन की गति

हमारे जीवन की गति

हमने कभी अपनी गति को समझा है तो अवश्य हम गतिशील है

पर हमने अपनि गति को नही समझा तो हम गति अवरोधक है - चाहे हम गति दौडती लगे🌷🙏🌷

गतिशील वही होता है जो गति का संचालन करे - गति का मार्गदर्शन करे - गति का योग्य उपयोग करे, गति नियंत्रित करे🌷🙏🌷

जो गति का संचालन करे उसकी गति सब कुछ सुनिश्चित - सुनियोजित करती आये🌷🙏🌷

वह तवंगर है - वह ज्ञानी है - वह श्रेष्ठी है - वह प्रतिष्ठित है🌷🙏🌷

जो गति की अबिगति हो अर्थात अव्यवस्थित - अनियंत्रित - अनिश्चित - अनिर्णीत - आकस्मिक - असमंजस - बिना अवगत - बिना संकेत - बिना निश्चय - होती है🌷🙏🌷

धनवान हो - रुआबदार हो - मालामाल हो

पर

वह तवंगर नही है - वह ज्ञानी नही है - वह श्रेष्ठी नही है - वह प्रतिष्ठित नही है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

काहू के कुल तन न विचारत
अविगत की गति कहि न परति हैं,
व्याध-अजामिल तारत।।
कौन जाति अरु पाँति विदुर की,
ताही कैं पग धारत।
भोजन करत माँगि घर उनकैं,
राज मान-मद टारत।।
ऐसे जनम-करम के ओछे,
ओछनि हूँ ब्यौहारत।
यहैं सुभाव सूर के प्रभु कौ,
भक्त-बछल-प्रन पारत।।
अदभुत! हे प्रभु आप करुणामय हो 🙏
हम पर कितनी कृपा बरसाई - बरसाये 🙏
आप न कुल - न जाति - न ज्ञाति - न प्रजाति को समझते हो न जानते हो न स्वीकारते हो 🙏
केवल जीव - आत्म और ब्रहम 🌷🙏🌷
हमारे गुरु - आचार्य - संप्रदाय - कुल को मानते है - जाति को मानते है - धन को मानते है - तन को मानते है - प्रतिष्ठा को मानते है - राजनीति को जानते है 🙏
ओहह! तो तो यह जीव-आत्म-ब्रहम-गुरु-आचार्य-संप्रदाय-कुल-जाति-धन-तन-प्रतिष्ठा-राजनीति आदि का अवश्य नाश होता ही है 🙏
श्री प्रभुने बिना सोच - अजामिल को तारा 🌷🙏🌷
श्री प्रभुने ...
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री यमुना यमुना भजन जपो

श्री यमुना यमुना जाप जपो

श्री यमुना यमुना स्मरण जपो

श्री यमुना यमुना गुण जपो

श्री यमुना यमुना वर्ण जपो

श्री यमुना यमुना धरण जपो

श्री यमुना यमुना रंग जपो

श्री यमुना यमुना सृजन जपो

श्री यमुना यमुना ध्यान जपो

श्री यमुना यमुना पूजन जपो

श्री यमुना यमुना दर्शन जपो

श्री यमुना यमुना नमन जपो

श्री यमुना यमुना करुणा जपो

श्री यमुना यमुना स्फूरण जपो

श्री यमुना यमुना नूतन जपो

श्री यमुना यमुना तरंग जपो

श्री यमुना यमुना प्राकट्य जपो

श्री यमुना यमुना प्रियतम जपो

श्री यमुना यमुना कृपाधि जपो

श्री यमुना यमुना चरण जपो

श्री यमुना यमुना शरण जपो

श्री यमुना यमुना गोपि जपो

श्री यमुना यमुना सघोष जपो

श्री यमुना यमुना पावन जपो

श्री यमुना यमुना सूर जपो

श्री यमुना यमुना मानसी जपो

श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण चतुर्थप्रिया " 🌷🙏🌷

" पंच महाभूत तत्वों "

पंच महाभूत तत्वों से जन्म

पंच महाभूत तत्वों से जीवन

पंच महाभूत तत्वों में विलीन

पंच महाभूत तत्वों से जगत

पंच महाभूत तत्वों से गति

पंच महाभूत तत्वों से परिवर्तन

पंच महाभूत तत्वों से प्रकृति

पंच महाभूत तत्वों से सृष्टि

अदभूत! अखंडता!

प्राथमिक - प्रारंभिक - पार्दुभाव

आत्मीयतत्व - आत्मा - परमात्मा

आध्यात्म - आध्यात्मिकता - आध्यार्थ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री यमुना घाट गया
पुष्टिरस पान करने
जैसे निहारा रोम रोम तनुनवत्व हो गया🌷

श्री गोवर्धन पथ छूआ
पुष्टिरज छूने को
जैसे छूआ तनमनस्का सखा हो गया🌻

श्री वृंदावन हरियाली महकी
पुष्टिप्रेम लुटने को
जैसे सांस भरी जीवन प्रेम विभोर हो गया🌺
राधा राधा राधा राधा🌺🌺🌺🌺
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण🌷🌷🌷🌷

श्री व्रजरज परिक्रमा लगाई
पुष्टि जीवन पाने को
जैसे रज लिपटाई छाई भक्ति मधुर मधुर💦

श्री राधा राधा राधा राधा
श्री कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

हमारो मन राधा श्री राधा 🌺
हमारो तन श्याम श्री श्याम🌷
हमारो धन मोहन श्री मोहन🌹
हमारो नैन गोविंद श्री गोविंद🥀
हमारो चैन वल्लभ श्री वल्लभ🌼
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सुनले मानव यह पैगाम

करु तुझे पहले मैं राम राम

जो कुछ कहता हूं एक बार

समझले जीवन भर का सार

अपनी संस्कृति से हो तैयार

खुद पर हो सत्य विश्वासधार

मन पर सकारात्मक हो विचार

तन से कहीं न खेलना व्यभिचार

नैन में बसाना पवित्र द्रष्टि संसार

अधर गाये विशुद्ध प्रेम संस्कार

हस्त पसारे सेवा प्रति व्यवहार

कदम चले जन्मभूमि बलिहार

आखरी में कहूं जय जय श्री राम

राम राम राम जय जय राम राम राम

श्याम श्याम श्याम जय जय श्याम श्याम श्याम

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" अन्न जल "

अन्न - हम क्या समझते है अन्न?

जल - हम क्या समझते है जल?

क्या खेत में उगे धान्य अन्न है?

क्या नदी, सागर और बरसात जल है?

अन्न का सही अर्थ है जो सदा पवित्र रख्खे

जल का सही अर्थ है जो सदा शुद्‌ध करे

हम जो बोते है वह पवित्र है?

हम जो उपभोगते है वह शुद्‌ध है?

हमारी इतनी महेनत

हमारी इतने आश्रित

हम पवित्र होते है?

हम शुद्‌ध होते है?

अध्ययन करलो

सेवा करलो

यज्ञ करलो

चिंतन करलो

विघटन करलो

पृथ्थकरण करलो

कब पवित्र हो?

कब शुद्ध हो?

एक बात कहे - हम उत्कंठित है?

एक सोच कहे - हम उत्साहित है?

हम तो - होता रहता है - होने दो

कौन करता है?

मैं मूर्ख हूं?

मुझे मूर्ख ही मानते है?

कोई नहीं करता तो मैं क्यूँ करुँ?

जो सब जीते है तो मैं भी ऐसा ही जीता हूँ

कितना बड़ा आश्चर्य!

हे प्रभु! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टिमार्ग – तेरह

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "